वर्ष : 09 | अंक : 11 | मूल्य : ₹ 50 | पृष्ठ: 56 | फरवरी : 2026 | RNI : BIHHIN/2018/77362

राष्ट्रीय हिंदी मासिक

करेंट एजेंडा

तीसरे विश्व युद्ध की आहट

परिधि

06

21वीं सदी में महाजनपद अराजकता की पुनर्कल्पना

09

आर्थिक संप्रभुता नए संकट में

13

नव साम्राज्यवादी दुनिया में महिलाएं

18

इतिहास का अंत और चापलूसी-कूटनीति का उदय

27

व्यापारिक फायदे के लिए ट्रंप कंपनी फ़लस्तीन को कर देगी बर्बाद

33

उच्च शिक्षा का लोकतंत्रीकरण

करेंट एजेंडा

मासिक पत्रिका

संपादक
हरिश्चन्द्र पटेल
84231 34764

सह-संपादक
डॉ. अनूप पटेल
9415455820

प्रबंध-संपादक
कौशल किशोर सिन्हा
72509 88983

ग्राफिक्स डिजाइनर
इमरान खान

उत्तर प्रदेश कार्यालय
503 अलीशा अपार्टमेंट मदन मोहन मालवीय मार्ग सिकन्दरबाग लखनऊ पिन कोड - 226001

मध्य प्रदेश कार्यालय
भेल कॉलोनी भोपाल मध्य प्रदेश पिन कोड - 462034

गुजरात कार्यालय
301/डी जीवराज नगरी अम्बिका टाउनशिप नाना मौवा राजकोट गुजरात 36000

बिहार कार्यालय
ग्राम वा पोस्ट कुथरौल नियर रेलवे लाइन के पास पटना बिहार पिन कोड 804453

उत्तराखंड कार्यालय
ईश्वर विहार सुंदर बाला रायपुर रोड देहरादून देहरादून उत्तराखंड पिन कोड 248008

झारखंड कार्यालय
श्याम नगर गांधीनगर सीसीएल कॉलोनी नजदीक सीनियर एडीवी स्कूल गांधीनगर कांके रोड रांची झारखंड पिन कोड 834008

44
खेत से काया तक

भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहाँ की मिट्टी, पानी, हवा और बीजों में हजारों वर्षों का ज्ञान छुपा है। हमारे पूर्वज जानते थे कि अगर खेत स्वस्थ है तो शरीर स्वस्थ रहेगा। इसीलिए गाँव का किसान केवल अन्नदाता नहीं थाए वह समाज का सबसे बड़ा डॉक्टर भी था। उसकी उगाई फसल ही दवा थीए वही पोषण थाए वही जीवन था। लेकिन आज स्थिति उलट है।

स्वामी मुद्रक प्रकाशक हरिश्चंद्र पटेल द्वारा वात्यान मीडिया एवं पब्लिकेशन प्रा० लि० धरहरा कोठी बैंक रोड पटना बिहार पिनकोड 800001 से मुद्रित एवं ग्राम एवं पोस्ट कुथरौल (नियर रेलवे लाइन) पटना बिहार पिनकोड 804453 से प्रकाशित

समस्त पद अवैतनिक हैं।

समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र पटना न्यायालय होगा।

मैगजीन के सब्सक्रिप्शन और विज्ञापन के लिये संपर्क करें

Mobile No :- 9415455820

Email- currentagenda860@gmail.com

डॉ रिचा गंगवार

MS, DNB, MRCOG (London)
Diploma in Gyne Laparoscopy

उत्तर भारत की विश्वसनीय स्त्री रोग/आईवीएफ (IVF) विशेषज्ञ

90% सफलता दर Laser hatching द्वारा

Vishesh Khand, Gomti Nagar, Lucknow Up-226010

For Free Counselling

(+91) 9919990500

Cin No. :U01404UP2022PTC163033

मुनि आयुर्वेदा फार्मर प्रोडयूसर कम्पनी लिमिटेड

Excellence In Health Is A Choice

मुनि आयुर्वेदा।
आधुनिक जीवन शैली के लिए
प्रकृति, विज्ञान और अनुशासन से गढ़ा गया!
एक प्रीमियम आयुर्वेदिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है

- ✓ किसान–स्वामित्व वाली संस्थागत शक्ति
- ✓ रसायन मुक्त, ट्रेसेबल फार्मिंग स्त्रोत
- ✓ नियंत्रित एवं मानकीकृत आयुर्वेदिक प्रोसेस
- ✓ दीर्घकालिक स्वास्थ्य और संतुलित जीवन पर केन्द्रित समाधान

For those Who Lead Responsibly-
Health Is Not A Luxury, It is A Standard.

Ayurveda Integrity Science Trust

Rampal Verma Founder & CEO
Muni Ayurveda Farmer Producer Company Limited
Cont. :9451239784, 9936349687

RAKESH KUMAR

Comprehensive Classes:
A Quest to Find Bihar's 60 Brightest Talents

Our goal is to help students from Bihar secure a spot in the Top 100 Ranks of JEE Advanced/ISI/CMI and qualify in different stages of Mathematical Olympiad.
Rakesh Kumar Comprehensive Classes, led by Rakesh Kumar, is an academic and social initiative aimed at preparing Bihar's most talented students to compete at the national/international level.
Rakesh Kumar is a renowned mathematics teacher and social worker who has taught at some of India's premier IIT academics like Narayana, Chaitanya, Aakash and Unacademy since 2006. During his stint at Narayana PU College, Sindhu Bhawan, Bangalore, Uffjwal Shankar achieved AR 11 in JEE Advanced 2023 under his guidance.

IOQM/PRMO, RMO, INMO JEE ADVANCED & MAIN Online Classes for IOQM

To Book A Counselling Appointment with
+91 97186 66634

इस अराजकता का आर्थिक चेहरा वैश्विक व्यापार-युद्ध है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के "टैरिफ वार" ने वैश्विक अर्थव्यवस्था के स्वरूप को बदल डाला है। ट्रम्प की 'अमेरिका फर्स्ट' नीति, 'मुक्त अर्थव्यवस्था' की जगह अब आर्थिक-संरक्षणवाद को बढ़ावा दे रही है जिसकी प्रमुख वजह रूस और चीन का सामरिक-आर्थिक महाशक्तियों के रूप मे ताकतवर होना है। अमेरिका अपने प्रॉडक्ट को बेचने के लिये भारत के कृषि क्षेत्र और फ़ूड इंडस्ट्री को खोलने के लगातार सामरिक, आर्थिक व कूटनीतिक दबाव डाल रहा है।

तीसरे विश्व युद्ध की आहट!

21 वीं सदी का विश्व किसी सुव्यवस्थित अंतरराष्ट्रीय प्रणाली की ओर नहीं, बल्कि एक ऐसे दौर की ओर बढ़ रहा है जहाँ अराजकता स्वयं व्यवस्था बन चुकी है। यह स्थिति प्राचीन भारत के महाजनपद काल की याद दिलाती है जहाँ 16 बड़ी शक्तियाँ तो थीं लेकिन कोई भी सर्वमान्य नैतिक या राजनीतिक केंद्र नहीं था। आज अमेरिका, चीन, रूस, भारत, यूरोप और अन्य क्षेत्रीय ताक़तें उसी महाजनपदीय ऑर्डर जैसे काम करती दिख रही हैं। आज अमेरिका-चीन व्यापार युद्ध, रूस-यूक्रेन संकट, ग्रीनलैंड विवाद, वेनेजुएला के राष्ट्रपति का अमेरिका द्वारा किड्नैपिंग, ईरान संकट, मध्य-पूर्व की उथल-पुथल ने एकध्रुवीय व्यवस्था को चूर-चूर कर दिया,वहीं बहुध्रुवीय व्यवस्था के भविष्य पर खतरा भी सामने आया है। संधियाँ अस्थायी हैं, मित्रता अवसरवादी है और युद्ध एक स्वीकृत नीति। ट्रम्प का जोर नियम-आधारित वैश्विक व्यवस्था के बजाय सौदे-आधारित दुनिया पर है जहाँ ताक़त ही कानून है और नैतिकता केवल भाषण। यह सोच अल्पकालिक लाभ दे सकती है, लेकिन दीर्घकाल में वैश्विक अराजकता को और गहरा करती है।

इस अराजकता का आर्थिक चेहरा वैश्विक व्यापार-युद्ध है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के "टैरिफ वार" ने वैश्विक अर्थव्यवस्था के स्वरूप को बदल डाला है। ट्रम्प की 'अमेरिका फर्स्ट' नीति, 'मुक्त अर्थव्यवस्था' की जगह अब आर्थिक-संरक्षणवाद को बढ़ावा दे रही है जिसकी प्रमुख वजह रूस और चीन का सामरिक-आर्थिक महाशक्तियों के रूप मे ताकतवर होना है। अमेरिका अपने प्रॉडक्ट को बेचने के लिये भारत के कृषि क्षेत्र और फ़ूड इंडस्ट्री को खोलने के लिए लगातार सामरिक, आर्थिक व कूटनीतिक दबाव डाल रहा है। ट्रम्प-टैरिफ ने भारत की आर्थिक संप्रभुता के सामने एक नया संकट खड़ा कर दिया है। भारत जैसे देश आत्मनिर्भरता की बात करते हैं, लेकिन वैश्विक पूँजी के दबाव में उनकी नीतियाँ सीमित होती जा रही हैं। इस आर्थिक-नव साम्राज्यवाद का दबाव भारत जैसे देशों पर ज्यादा दिख रहा है।

सोवियत रूस के छिन्न-भिन्न होने के बाद ये कहा गया कि 'इतिहास का अंत' हो चुका है। लेकिन आज का दौर यह साबित करता है कि इतिहास समाप्त नहीं हुआ, उसने अपना चरित्र बदल लिया है। आज की कूटनीति- विचारों, सिद्धांतों या संस्थानों से नहीं, बल्कि चापलूसी, सौदेबाज़ी और व्यक्तित्व-पूजा से संचालित हो रही है। राष्ट्राध्यक्षों के व्यक्तिगत रिश्ते, संसदों और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं से अधिक प्रभावशाली हो गए हैं।वर्ष 2025 के नोबेल शांति पुरुस्कार विजेता द्वारा अपना मेडल, अमेरिकी राष्ट्रपति को ट्रांसफर करना चापलूसी-नीति की पराकाष्ठा है।

वर्तमान मध्य एशिया के संकट को सभ्यताओं के संघर्ष के नैरेटिव के रूप मे देखा जा रहा है। इसे अमेरिका-ईरान संघर्ष, ईसाई-पश्चिम बनाम इस्लामी पूर्व, नाभिकीय संकट से गज़ा तक देखा जा सकता है। अमेरिका और ईरान टकराव को इस्लाम बनाम ईसाइयत के रूप में प्रस्तुत करना सत्ता-राजनीति को धार्मिक नैतिकता का जामा पहनाने की कोशिश है।इस पूरी व्यवस्था का सबसे क्रूर उदाहरण ग़ज़ा है। ग़ज़ा आज केवल मानवीय त्रासदी नहीं, बल्कि नव-पूँजीवादी युद्ध मॉडल का प्रयोगशाला बन चुका है। गैस संसाधन, व्यापारिक मार्ग, पुनर्निर्माण के ठेके और हथियार उद्योग इन सबके बीच फ़िलिस्तीनी जीवन एक 'कोलेटरल डैमेज' बन गया है। डोनाल्ड ट्रम्प द्वारा ग़ज़ा के पुनर्निर्माण के लिये एकतरफा 'बोर्ड ऑफ पीस' का गठन करना इसका सटीक उदाहरण है। युद्ध अब विफलता नहीं, बल्कि लाभ का साधन है। आज का वर्ल्ड ऑर्डर न तो नैतिक है, न स्थिर। यह महाजनपदों की तरह शक्तिशाली राज्यों की प्रतिस्पर्धा है, जहाँ कानून कमजोर और मानवता हाशिये पर है। क्या आप भी तीसरे विश्व-युद्ध की आहट महसूस कर रहे है?

- डा. अनूप पटेल

21वीं सदी में महाजनपद अराजकता की पुनर्कल्पना

डा. राजीव रंजन

एसोसिएट प्रोफ़ेसर, चाइनीज स्टडीज (दिल्ली यूनिवर्सिटी)

21वीं सदी में महाजनपद अराजकता की पुनर्कल्पना एक ऐसी अवधारणा है जो प्राचीन भारतीय इतिहास के उस काल को वर्तमान वैश्विक व्यवस्था से जोड़ती है, जहाँ कोई एक सर्वोच्च सत्ता नहीं थी, लेकिन फिर भी पूर्ण अराजकता नहीं थी।प्राचीन भारत में ईसा पूर्व छठी से चौथी शताब्दी के बीच सोलह महाजनपदों का काल संरचित अराजकता का उदाहरण हैं। उस समय मगध, कोसल, वज्जि जैसे सोलह प्रमुख राज्य अस्तित्व में थे। इनमें राजतंत्र और गणराज्य दोनों शामिल थे। कोई केंद्रीय सर्वोच्च सत्ता नहीं थी। फिर भी यह व्यवस्था पूर्ण अराजकता में नहीं डूबी। कई कारक इस संरचित अराजकता को स्थिरता प्रदान करते थे। सबसे पहले वैवाहिक संबंध। प्राचीन भारतीय राजनीति में विवाह एक प्रमुख कूटनीतिक उपकरण था। उदाहरणस्वरूप, मगध के बिंबिसार ने कोसल की राजकुमारी कोसलदेवी से विवाह किया, जिससे कोसल और मगध के बीच अस्थायी शांति स्थापित हुई। इसी प्रकार अजातशत्रु के काल में भी ऐसे संबंध बनाए गए। ये विवाह न केवल युद्ध रोकते थे, बल्कि राज्यों के बीच पारिवारिक बंधन भी पैदा करते थे, जो दीर्घकालिक सहयोग का आधार बनते थे।

दूसरा महत्वपूर्ण कारक साझा धार्मिक और सांस्कृतिक बंधन थे। वैदिक परंपराएँ, और विशेष रूप से बौद्ध तथा जैन धर्म के उदय ने एक साझा नैतिक ढांचा प्रदान किया। बौद्ध संघ और जैन मठों को विभिन्न राज्यों द्वारा संरक्षण दिया जाता था। तीर्थस्थल जैसे राजगृह, वैशाली, श्रावस्ती आदि सभी महाजनपदों के लिए साझा महत्व रखते थे। ये धार्मिक केंद्र राजनीतिक प्रतिस्पर्धा के बीच भी एक प्रकार की न्यूट्रल ग्राउंड प्रदान करते थे, जहाँ राजा मिलते थे, चर्चा करते थे और कभी-कभी संधियाँ भी करते थे।

तीसरा और शायद सबसे मजबूत स्थिरता का स्रोत व्यापारिक तंत्र थे। इस काल में लोहे की तकनीक के प्रसार से कृषि और शिल्प उत्पादन बढ़ा। गंगा, यमुना, घाघरा जैसी नदियों ने व्यापार को आसान बनाया। धातु, वस्त्र, नमक, रत्न, हाथीदांत, चंदन, मसाले आदि वस्तुओं का व्यापार उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक फैला हुआ था।

प्राचीन भारत में उत्तरापथ और दक्षिणापथ दो प्रमुख महामार्ग थे, जो महाजनपद काल (ईसा पूर्व छठी से चौथी शताब्दी) में व्यापार, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और विचारों के प्रसार के लिए जीवनरेखा की तरह कार्य करते थे। ये मार्ग न केवल आर्थिक एकीकरण को बढ़ावा देते थे, बल्कि महाजनपदों के बीच पारस्परिक निर्भरता को मजबूत बनाते थे, जिससे संरचित अराजकता में स्थिरता बनी रहती थी।ये मार्ग केवल व्यापारिक नहीं थे—वे विचारों के वाहक भी थे।

पड़ोसी का पड़ोसी संभावित मित्र बनता है

बौद्ध और जैन धर्म इनके माध्यम से फैले। उत्तरापथ पर तक्षशिला से यूनानी प्रभाव आया, जबकि दक्षिणापथ ने दक्षिण भारत को जोड़ा। कुल मिलाकर, उत्तरापथ और दक्षिणापथ ने महाजनपद काल में आर्थिक एकता और पारस्परिक निर्भरता को मजबूत किया, जिससे पूर्ण अराजकता टली। तक्षशिला, राजगृह, उज्जैन, कौशांबी जैसे नगर व्यापारिक केंद्र बने। यदि कोई राज्य व्यापार मार्गों को बाधित करता या लूटपाट करता, तो इससे प्रभावित व्यापारी समुदाय, कारवाँ मालिक और पड़ोसी राज्य प्रतिक्रिया देते थे—कभी आर्थिक बहिष्कार से, कभी सैन्य दबाव से। इस प्रकार व्यापार ने एक प्रकार की पारस्परिक निर्भरता पैदा की, जो युद्ध की लागत को बढ़ाती थी। कौटिल्य के अर्थशास्त्र ने इस वास्तविकता को मंडल सिद्धांत के रूप में व्यवस्थित किया। इसमें एक राज्य (विजिगीषु, यानी विजय की इच्छा रखने वाला) के चारों ओर वृत्त बनते हैं। निकटतम पड़ोसी प्राकृतिक शत्रु (अरि) होता है। इसका कारण भौगोलिक निकटता और संसाधनों की होड़ है। पड़ोसी का पड़ोसी संभावित मित्र बनता है। इससे शत्रुता और मित्रता के वैकल्पिक वृत्त बनते हैं। इन्हें षड्गुण्य नीति से प्रबंधित किया जाता है। यह नीति शांति, युद्ध, तटस्थता, प्रस्थान, संधि और द्वैध नीति पर आधारित है। अंतिम लक्ष्य राज्य विस्तार था। मगध ने इसे बिंबिसार, अजातशत्रु, नंद वंश तथा चंद्रगुप्त मौर्य के नेतृत्व में हासिल किया। इससे पहला अखिल भारतीय साम्राज्य बना।